IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उरांव जनजाति महिलाओं की वर्तमान परिस्थितियों एवं चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

A sociological Analysis of the Current Conditions and Challenges of Oraon Tribal Women

(झारखंड राज्य के गढ़वा जिले के विशेष संदर्भ में)

(With special reference to Garhwa District of Jharkhand State)

Dr. NAWALESH RAM

Head, Department of sociology, Degree College Mahagama ,Godda , Jharkhand 814154

अमूर्त(Abstract) :- उरांव समाज में महिलाओ की परिस्थिति को पारम्परिक, निवास स्थान, रहन–सहन, खा–पान, भेस–भूसा तथा उनकी संस्कृति के आधार पर आका जा सकता हैं। इस समाज के पूर्वजो ने कईक वर्सो से जंगलो में निवास करते थे तथा पुरुष शिकार करते थे और महिलाएँ घर के देख भाल और बच्चो की निगरानी करती थी। पुरुष बाहरी कार्य करते हुए उस दिन भी एक स्वत्रंता पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे जबकि महिलाएँ की दयारा उस समय भी मात्र घर तक ही सिमित थी और आज भी इस समाज की महिलाए घर कि सम्पूर्ण कार्य भार संभालते हुए घर परिवार तक ही अपनी जीवन गुजारती है। इस समाज के कुछ शिक्षित लोगो में व्यवहारिक बदलाव आया है जबकि अधिकांश लोग पुराने परम्परा एव संस्कृति के अनुकूल ही व्यवहार करते है। उरावं समाज की अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित है जिसके कारण उन्हें बाहरी एव आंतरिक तौर पर तार्किक ज्ञान का अभाव है, जिसके कारण न तो वे अपने अधिकार के प्रति सचेत हो रही है और न ही उन्हे सभी चीजों का ज्ञान है जिसके कारण उन्हे अनेक समस्या के सामना करना पड़ता है। उरांव समाज की बालिकाओं को छोटी सी उम्र में ही विवाह कर दिया जाता है जिस उम्र में उन्हें पढ़ाई कर कैरियर बनाना होता है, उस उम्र में वह मां बन जाती है जिससे उनका समस्या बढ़ता ही जाता है। इसी के साथ पुरुष–स्त्री में भेद–भाव भी किया जाता है। लड़का को अधिक महत्व देते हैं तथा लड़की को कम महत्व देते हैं। उरांव समाज के लोग आर्थिक रूप से बहुत कमजोर हैं क्योंकि इनके पास भूमि भी नहीं है यदि है तो वह छोटा सा भूमि का टुकड़ा है और वह भी पथरीला भूमि है जो बहुत कम उपजाऊ है जिसके कारण कृषि नहीं होता और बेरोजगारी का बोझ इन लोगों के झेलना पड़ता है। कृषि नहीं होने के कारण खाद्य पदार्थ का समस्या हमेशा बना रहता है, जिसे पर्याप्त मात्रा में पोषण नहीं मिल पाता है जिससे उनकी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कुंजी शब्द :- अर्थव्यवस्था, लिंग असमानता, स्वास्थ्य, पोषण और बेरोजगारी

उरांव जनजातीय महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और इसी प्रकार के अनेक स्थिति में कुछ सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दृष्टिकोण से यह महिलाएँ की स्थिति बहुत कमजोर है। क्योंकि संसाधन सीमित होने के कारण यह महिलाएँ सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में अपने आप को विस्तृत नहीं कर पाई है। सरकार के द्वारा इनके लिए हर संभव प्रयास किया जाता है ताकि यह शैक्षणिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त हो फिर भी इनके पास समस्या और चुनौतियां लगा रहता है जिसके कारण उरांव समाज की महिलाएँ की स्थिति हर क्षेत्र में

बहुत दैनीय है। यह महिलाएँ खासकर कामकाजी और घरेलू महिलाएँ हैं जिसके कारण इनको अपने अधिकार के बारे में भी संपूर्ण ज्ञान नहीं है। इसलिए यह महिलाएँ अभी भी पारंपरिक गतिविधियों के अनुरूप ही अपने जीवन को यापन कर रही हैं। प्राप्त आंकड़ों से यह पता चला कि यह महिलाएँ मेहनत मजदूरी का कार्य करती है जिसे कुछ इनको आय प्राप्त होती है और इस आय से अपना परिवार का भरण–पोषण करती है। इनका योगदान खासकर कृषि क्षेत्र, भवन निर्माण, सड़क निर्माण, खदान और अन्य इसी प्रकार के गैर मजदूरी कार्य के क्षेत्र में यह उरांवसमाज की महिलाएँ योगदान करती है।

साहित्य पुनरावलोकन :-

झारखंड राज्य प्राचीन आदिवासियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां प्राचीन काल से ही जनजातीय समाज निवास करते आ रही हैं, लेकिन इन लोगों को जिनमीन समस्या आज तक समाप्त नहीं हुआ है। अगर शैक्षिक दृष्टि से देखा जाए तो यह लोग बहुत कमजोर हैं तथा महिलाएँ की शिक्षा का स्तर काफी कम है। शैक्षणिक स्थिति के आधार पर आदिवासी महिलाएँ बहुत कमजोर है। आदिवासियों के लिए सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा झारखंड राज्य के सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यह महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि अतीत में सरकार और नीति निर्माता द्वारा जनजातियों को समान अवसर से वंचित रखा गया है। आदिवासी बच्चों गरीबी, निक्षारता और अन्य अभाव के कारण दुष्चक्र में फंसे हुए हैं। जनजातीय समाज की लड़कियों को शिक्षा के लिए छात्रावास की सुविधाएं हैं, अनेक योजनाएं भी हैं उनके विकास के लिए मगर वह व्यवस्था उनके पास नहीं पहुंच पाता है(Singh, 2022)।पूर्वी भारत का एक झारखंड राज्य अपनी समृद्धि, सांस्कृतिक विरासत और विविध परंपराओं के लिए जाना जाता है। झारखंड की संस्कृति एक जीवित तना–बना है जो आदिवासी परंपराओं, त्योहारों ,संगीत, नृत्य, कला और व्यंजनों के धागे से बुनी गई है । यहां निवासरत संथाल, मुंडा, उरांव, हो, खारिया, एवं अन्य जनजातीय समुदाय उत्सव के साथ अपने नृत्य करती है। जिसमें महिलाएँ की भूमिका अग्रिम होता है तथा उनका योगदान के बिना यह कार्य संभव नहीं है। संस्कृति की आधार पर जनजातीय महिलाएँ की स्थिति काफी हद तक उच्च है फिर भी कुछ कार्य सिर्फ पुरुषों के द्वारा ही किया जाता है(Phalachandra & Tiwari, 2024)।किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति उनके सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव से निर्धारित होती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को अपने निर्णय स्वयं लेने का अधिकार देती है तथा स्थिति में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्योंकि आर्थिक व्यवस्था ही समस्त सामाजिक शैक्षणिक आदि परिवर्तन एवं सुदृढ़ स्थिति हेतु महत्वपूर्ण कारक है(Chokroborty & Jana, 2021)।भारत में जनजातीय महिलाओं की एक विशेष समूह नहीं माना जाता है और उसके साथ अलग व्यवहार किया जाता है। जबकि पुरुषों की तरह अनेक गतिविधियों में वह शामिल रहती है चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो या घरेलू जीवन आदि। आदिवासी महिलाएँ को मातृत्व के नजरिए से देखा जाता है अर्थात पुरुष पर आर्थिक निर्भरता के बिना पीढ़ियों को बढ़ाती है। जनजातीय महिलाएँ आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, उदाहरण के लिए हजारीबाग जिले के बिरहोर जनजाति जंगल से कंदमूल लाने और फलों का संग्रह निश्चित मौसम में जो किया जाता है, वह मुख्य रूप से महिलाओं के द्वारा किया जाता है जो भोजन का आहार है। इसके अतिरिक्त भी जब पुरुष शिकार करने जाते हैं तब महिलाएँ भी साथ में जाती हैं और खरगोश और जंगली पशु–पक्षियों जैसे छोटे–छोटे जानवरों को पकड़ने में भाग लेती है। यह सब कार्य करते हुए भी उनको अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तथा अनेक कष्ट उठाना पड़ता है(Mkherjee,2015)।आदिवासी समाज में महिलाएँ प्राकृतिक पर्यावरण से बहुत करीबी से जुड़ी हुई है। गरीब आदिवासी महिलाएँ अपना जीवन यापन के लिए अधिकांश प्रकृति पर निर्भर रहती हैं, जैसे पशुपालन, दैनिक उपयोग के लिए पीने का पानी लाना, खाना पकाने के लिए जंगल से लकड़ी लाना आदि यह सब कार्य करने के लिए उनको अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है(Prasad & Sole, 2022)।आदिवासी महिलाओं को अपने शादी के बारे में फैसला करने का अधिकार है जो उच्च सामाजिक स्थिति के घोतक है। इसके साथ ही आर्थिक स्थिति के मामले में भी स्वतंत्र है, कृषि कार्य के अतिरिक्त अनेक कार्य में वह भाग लेती है जैसे स्वदेशी कुटीर उद्योग, आदिवासी कला और कला,कृतियों के उत्पादन के सभी क्षेत्र में काम करती है। इसके साथ उनको हर क्षेत्र में उनकी सहभागिता को

देखा जा सकता है इतना करते हुए भी उनका स्थिति निम्न है**(Binjha, 2020)**।समाज में किसी व्यक्ति या समूह की स्थिति मुख्य रूप से स्वास्थ्य स्थिति, रोजगार की स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता आदि से निर्धारित है। भारतीय समाज पितृसत्मक पारिवारिक संरचना का प्रभुत्व है इसलिए उनका वर्चस्व एवं उच्च स्थिति प्राप्त है। इसके विपरीत महिलाएँ का वर्चस्व एवं स्थिति का स्तर बहुत कम है तथा उनके साथ अनेक समस्या एवं चुनौतियां भी हैं जो उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती है**(Dasaratharamaiah & Naik, 2019)**।जीवन, आजीविका, प्रतिष्ठा और समान अधिकार के लिए महिलाओं के आंदोलन वैचारिक रूप से विभाजित है। एक दृष्टिकोण अपने परिवार और समुदाय के अंदर और बाहर पितृ सत्ता के खिलाफ नारीवादी स्थिति के लिए खड़ा है। वही दूसरा समुदाय अपने अस्तित्व की तात्कालिक चुनौतियों का सामना करने के लिए लिंग द्वंदवाद से आगे जाने में विश्वास रखता है जिसे उनका स्थिति सुदृढ़ हो और चुनौतियां समाप्त**(Gautam,2022)**।अनेक शोध से पता चला है कि महिलाओं को सशक्तिकरण और नेतृत्व के रास्ते में दोहरी बाधा का सामना करना पड़ता है। एक तो नेतृत्व की स्थिति प्राप्त करने में संघर्ष बाधाएं दूसरा लिंग आधारित परिवेश के कारण आंतरिक संघर्ष आदि समस्याएं उनको सामने आती है। महिलाएँ को स्थिति सुधारने के लिए आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक आदि स्वतंत्रता की आवश्यकता है, हर क्षेत्र में तब उनका स्थिति में सुधार हो सकता है**(Kaushik & Bhaskar, 2022)**।झारखंड राज्य भारत के कईक राज्यों के पिछड़े हुए राज्य के विशेषताओं को साझा करता है ,जैसे उच्च शिशु मृत्यु दर, बच्चों और माता का कम टिकाकरण, संक्रामक रोगों के कारण उच्च मृत्यु दर , उच्च मातृत्व मृत्यु दर आदि। आदिवासी महिलाओं की बात आती है तब यह मामला और खास हो जाती है। स्वास्थ्य स्थिति के मामले में जनजातीय महिलाएँ की स्थिति निम्न है । स्वास्थ्य स्थिति गिरने के अनेक कारण है, यह महिलाएँ अपने स्वास्थ्य को सुधार नहीं पाती है क्योंकि इनके साथ अनेक चुनौतियां भी हैं जिसे उनके निम्न स्वास्थ्य स्थिति का घोतक है**(Kumari, 2020)**।

शोध अंतराल :-

झारखंड एक आदिवासी बहुल राज्य है। यहां की कुछ जनजातीय समाज की महिलाएँ जैसे संथाली मुंडा आदि का हर क्षेत्र और हर स्थिति में सुधार हुआ है। लेकिन उरांव समाज की महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, व्यवसाय और नौकरी पेशा आदि के आधार पर पिछड़ी हुई है। इनके सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर अध्ययन बहुत कम हुआ है। इसलिए उरांव समाज की महिलाओं की वर्तमान स्थिति जानने के लिए यह अध्ययन बहुत जरूरी है। ताकि उनकी स्थिति जानकर उनकी समस्या को उजागर किया जा सके।

जनजातीय महिलाओं की चुनौतियाँ :-

उरांव समाज में महिलाओं की सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती आर्थिक अवसर तक सीमित पहुंच है। क्योंकि महिलाओं को अक्सर कार्य स्थल पर अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसके अंतर्गत वेतन में अंतर, कम करियर उन्नति और व्यावसायिक अलगाव शामिल है। इसी प्रकार महिलाओं के सामने अनेक चुनौतियां हैं, जैसे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, राजनीति प्रतिनिधित्व और स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुंच आदि। विभिन्न क्षेत्र में जनजातीय महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महिलाओं सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने के लिए अनेक बाधाओं को तोड़ना और भेदभावपूर्ण प्रभाव को खत्म करना चाहती है, फिर भी परिस्थिति के अनुसार उनका अनेक समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

उद्देश्य :- उरांव समाज मे महिलाओं की स्थिति और समस्या को समझना।

आँकड़ों के संकलन की विधि :-

वर्तमान शोध उरांव जनजातीय महिलाओं पर आधारित है, इसलिए शोधकार्य अध्ययन के लिए गुणात्मक और गणनात्मक शोध प्रविधि का चुनाव किया गया है। गुणात्मक शोध के अंतर्गत व्यक्तियों की अभिवृत्तियों, पसंदों या व्यवहारों के कारणों तथा अभिप्रेरणाओं के प्रति समझ पैदा करने के लिये व्यैक्तिक

लेखों, साक्षात्कारों, तथा असहभागी प्रेक्षण विधियों का प्रयोग कर तथ्य संकलन किया गया है। मात्रात्मक शोध प्राविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण, स्ट्रक्चर्ड इंटरव्यू, अवलोकन, रिकार्ड्स और रिपोर्ट्स के रिव्यू आदि के द्वारा तथ्य प्राप्त किया गया है।अध्ययन क्षेत्र कार्य में झारखंड राज्य के गढ़वा जिला के नगर ऊंटरी तहसील के अंतर्गत सुंडी ग्राम पंचायत के पासवान गांव के 50 महिलाओं को साक्षात्कार कर तथ्य प्राप्त किया गया है। यह गांव पहाड़ी क्षेत्र के अंतर्गत आता है, क्योंकि गांव के नजदीक ही एक विशाल खुर्धन पहाड़ है। इसी पहाड़ी के नीचे यह गांव बसा हुआ है, जहां उरांव समाज के लोग निवास करते हैं। यह गांव की महिलाएँ आज भी पारंपरिक तरीके से अपने जीवन को यापन कर रही हैं।

संरचित साक्षात्कार अनुसूची :-

वर्तमान अध्ययन में शोध प्रविधि के अंतर्गत तथ्यों के संग्रहण के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया किया गया है। संरचित साक्षात्कार के अंतर्गत महिलाओं की समस्या से संबंधित साक्षात्कार कर वास्तविक तथ्य प्राप्त किया गया है।

रोजगार के आधार पर महिलाओं की स्थिति :- रोजगार की समस्या इन महिलाओं के लिए बहुत बड़ी समस्या रही है। रोजगार उन्हीं पुरुषों या महिलाओं को मिलता है जिनके पास तकनीकी ज्ञान या अनुभव हो,डिप्लोमा हो या विशेष कार्य का प्रशिक्षण उनके द्वारा लिया गया हो। इस जनजाति की बात करे तो न तो इसके पास डिग्री है, न डिप्लोमा, न ही तकनीकी ज्ञान है। यहाँ तक ये विशेष प्रशिक्षण से भी दूर है। इन सबको ज्ञान और अनुभव नहीं होने कारण उरांव जनजाति के महिलाओं को रोजगार नहीं मिलता है और ये महिलाएँ अपने जीवकोपार्जन हेतु किसी निजी मजदूरी के कार्य करके अपना जीवन व्यतीत करती है।

रोजगार के मामलों में महिलाएँ हमेशा न्यूनतम स्थान पर रही है। जनजातीय समाज की महिलाएँ रोजगार के मामलों में बिलकुल निम्न स्थान पर रही है, क्योंकि इनको नाबालिग उम्र में ही किसी निजी मजदूरी कार्यो में लगा दिये जाता है। जिसके कारण शिक्षा ,डिग्री ,डिप्लोमा ,प्रशिक्षण आदि का अवसर समाप्त हो जाता है, इस प्रकार उरांव जनजातीय समाज की महिलाओं को रोजगार न उपलब्ध होने के कारण कोई एक नहीं है बल्कि अनेक समस्या हैं। उरांव समाज में महिलाओं के अध्यन द्वारा प्राप्त आंकड़ो से यह स्पष्ट हुआ की अधिकांश महिलाएँ मजदूरी का ही कार्य करती हैं।

सूचनादाताओं की आर्थिक स्थिति

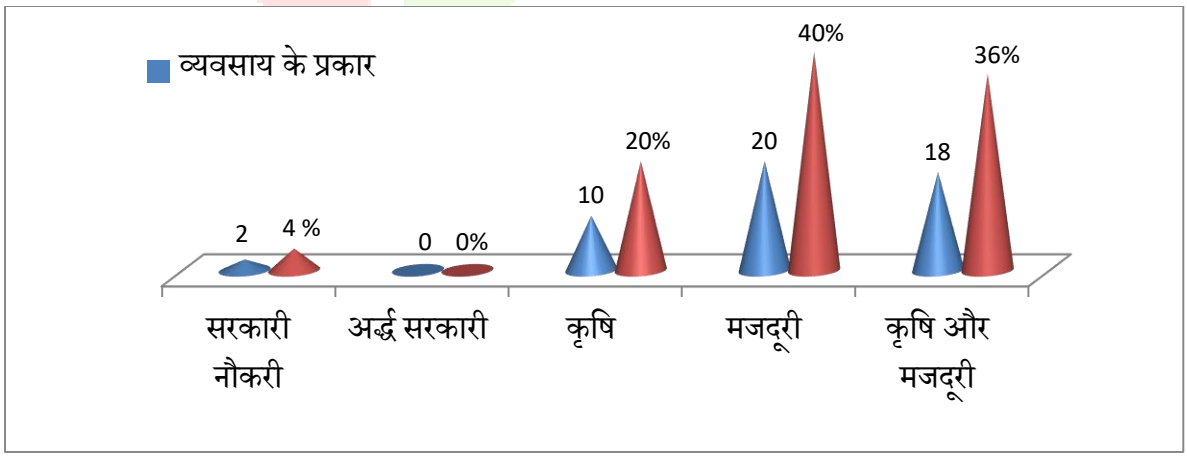

उपरोक्त ग्राफ में महिला सूचनादाताओं की आर्थिक स्थिति को व्यवसाय के आधार परदर्शाया गया है। सबसे अधिकतम 40 प्रतिशत महिलाएँ मजदूरी तथा न्यूनतम 4 प्रतिशत महिलाएँ सरकारी नौकरी करती है। 20 प्रतिशत महिलाएँ कृषि और 36 प्रतिशत महिलाएँ कृषि मजदूरी दोनों कार्य करती है।

विश्लेषण :-

झारखंड राज्य के गढ़वा जिले के पासवान गांव में उरांव समाज की महिलाएँ की स्थिति समय के अनुसार बदलती रही है। यहां के अधिकांश महिलाएँ कृषि एवं मजदूरी की कार्य करती है जिससे उनका आय प्राप्त होता है और इसी आय से अपना परिवार की भरण–पोषण करती है। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है की इन महिलाओं को प्रतिदिन मजदूरी का कारण नहीं मिलता है। समय के अनुसार इनको कार्य मिलता है, जैसे कहीं सड़क निर्माण हो रहा हो या बिल्डिंग निर्माण हो रहा हो उसी में महिलाएँ कार्य करती है। जब वह कार्य समाप्त हो जाता है तब महिलाएँ को दोबारा कार्य ढूंढना बहुत मुश्किल होता है, कृषि का कार्य भी महिलाओं को कृषि के सीजन में ही मिलता है इसके बाद महिलाएँ को अपने जीवन चलाने के लिए बहुत सारे चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा के दृष्टि से देखा जाए तो यह महिलाएँ की शैक्षणिक स्थिति बहुत कम है, अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित हैं। इनको शिक्षा के क्षेत्र में, रोजगार के क्षेत्र में, कृषि के क्षेत्र में, महिलाएँ कार्य करके आगे तो बढ़ना चाहती हैं लेकिन आर्थिक समस्या और चुनौतियों के कारण यह महिलाएँ कुछ कार्य नहीं कर पा रही हैं। यह अध्ययन से तथ्य निकाल कर आया की महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करना चाहती है, मेहनत मजदूरी करके आय प्राप्त करना चाहती है, हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती हैं, लेकिन उनके सामने संसाधन सीमित होने के कारण अनेक चुनौतियों का सामना करनी पड़ती है।

शोध का महत्व :-

- देश एवं समाज के वास्तविक विकास के लिए जरुरी है कि उरांव जनजातीय समाज की महिलाओं की समस्या और चुनौतियां पर विचार किया जाए।
- परिवार और समाज के केंद्रीय धूरी संरक्षित किया जाए तथा महिलाओं की बिगड़ती परिस्थिति को संरक्षित और सुरक्षित किया जाए।
- उरांव जनजातीय समाज की महिलाओं की स्थिति सुधार हेतु शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार और जागरूकता के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

निष्कर्ष :-

उरांव समाज की महिलाएँ काफी मेहनती, कठिन परिश्रम करने वाली होती हैं, तथा महिलाएँ गृह कार्य के अलावा खेतों, जंगलों, भवन निर्माण कार्यों, ईट भट्टा, खदानों, सड़क निर्माण आदि कार्यों में देखा जा सकता है। इस प्रकार महिलाएँ अधिक परिश्रमी होने के बावजूद भी समाज में परम्पराओं से प्रचलित आदर्श मान्य–मूल्यों और विश्वास के कारण वह धार्मिक, सामाजिक, राजनीति और पारिवारिक अधार पर प्रधान नहीं होती है। इस समाज की महिलाएँ किसी निजी मजदूरी कार्य के साथ–साथ घर के कार्य व इसके अलावा पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सफलता पूर्वक सम्पादित करती हैं। स्त्रियाँ, लड़कियाँ, पत्नी, माँ, बहु आदि के रूप में अपनी भूमिकाओं को निभाते हुए पारिवारिक सहयोग करती हैं।

उरांव जनजातीय समाज की महिलाओं की अनेक समस्याएं हैं। आर्थिक समस्या महिलाएँ के तो है ही लेकिन खाद्य पदार्थ का भी अभाव पाया गया है। महिलाएँ से साक्षात्कार कर तथ्य प्राप्त किया जा रहा था तब अधिकांश महिलाएँ की कहना था कि हमारे पास कृषि योग्य पर्याप्त भूमि नहीं है। पथरीला भूमि है जिससे कृषि लगभग नहीं के बराबर होता है। निवास स्थान के आस–पास स्वास्थ्य केंद्र भी नहीं है जिसके कारण स्वास्थ्य समस्या या बीमारी होने पर इलाज के लिए बाहर जाना पड़ता है। कुछ उरांव समाज की महिलाएँ का मानना था कि महिला पुरुष में भेद भी किया जाता है। क्योंकि महिलाएँ कितना भी मेहनत मजदूरी या बच्चों के देख–भाल संबंधी कार्य करें फिर भी उनकी कार्य की प्रशंसा नहीं किया जाता है बल्कि उनको कोशने का कार्य किया जाता है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब महिला की पति नशे हालत में होता है। इसी प्रकार के अनेक समस्या उरांव समाज की महिलाएँ के पास लगी रहती है।

संदर्भ सूची :-

- Binjha, P. (2020). Socio-Economics Status of Tribal Women of Jharkhand. *International Journal of Applied Research*. 6 (11).32-35. Retrieved from https://www.allresearchjournal.com/archives/2020/vol6issue11/PartA/6-10-409-842.pdf
- Bhaskar, p. & kaushik, M. (2022). Womens Leadership in Tribal Enterprises-A Study in Cooperatives Based Tribal Enterprises in Jharkhand, india. *International Journal of Multidisciplinary : Applied Busines And Educationa Research*. 3 (1). 20-24. Retieved. from file:///C:/Users/hp/Downloads/Womens_Leadership_Trends_in_Tribal_Enterprises-A_%20(3).pdf
- Gautam,A. (2023). Native Land Right System About Tribal Women in Jharkhand An Interpretative Analysis. *Journal of Land and Rural Studies*. 11 (1). 84-96. DOI: 10.1177/23210249221127832
- Jana, S. & Chakroborty, D. (2021). Freedom and Decision Making Role of Tribal. Women : in Galudih Village Est Singhbhum, Jharkhand. *International Journal of Trend in Scientific Research and Development*.5 (2). 983-986. Retrieved from https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd38600.pdf
- Kumari, M. (2020). Health and Medicine Among Tribal Women of Jharkhand An Anthropological Enquiry. *International Journal of Research in Social Science*. 10 (6). 252-255. Retrieved.from https://www.vbu.ac.in/ftpwebapps/vbu/resources/vbu_web/dept/anthro/14.Health%20and%20medicine%20among%20tribal%20women.pdf
- Mukherjee, M. (2015) Reflection on the Status of Women in Tribal Society of India. *PanchacotesSAYS*. 6 (1). 11-12 . Retrieved.from https://journal.panchakotmv.ac.in/published/paper_full_text/341721668519886.pdf
- Naik, R. & Dasaratharamaiah, K.(2019). Educationa and Socio-Economics Development of Tribal Women : A Study. *International Journal of Economics*. 7 (4). 9-14. DOI: https://doi.org/10.34293/ economics.v7i4.608
- Prasad, S .& Sole, N., A. (2022). Women Participation in Tribal Self Governance – An Analysis. Of Panchayats Extension to Scheduled Areas. Of Jharkhand. Bihar *Journal of Public Administration*. 18 (1). 157-164 Retrieved From file:///C:/Users/hp/Downloads/BJPAXVIIIIssue01-min%20(2).pdf
- Singh, S. (2022). The Status of Tribal Education in Jharkhand : A Situational Analaysis. *International Journal of Novel Research and Development*.7 (12). 922-925. Retrieved from https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2212288.pdf
- Tiwari, S. & Phalachandra.B. (2024). Culture of Tribal people of Jharkhand. An Overview. *International Journal of Research publication and Reviews*. 15 (6). 151-154. Retrieved From. https://ijrpr.com/uploads/V5ISSUE6/IJRPR29623.pdf